श्री :

अशेष चिदचिद्वस्तु शेषिणे शेषशायिने।
निर्मलानन्त कल्याणनिधये विष्णवे नमः॥
श्री गोदायै नमः।

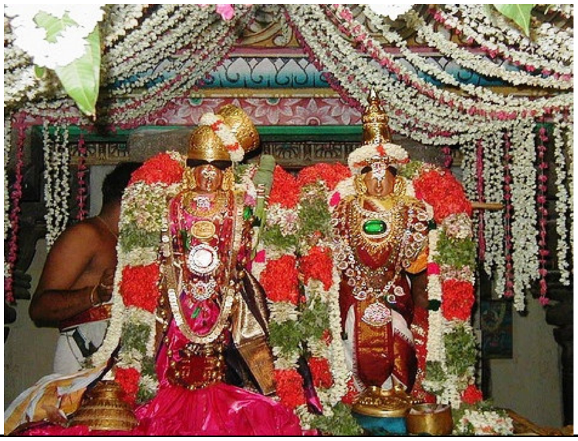

श्रीगोदाजी का जन्मस्थान	**श्रीगोदाजी और श्रीरंगमन्नारजी**
श्रीविल्लिपुथ्थूर, तमिलनाडु.	

श्री गोदाजी अवतार तनियन

नीलातुंगस्तनगिरितटी सुपतमुद्बोध्य कृष्णं।
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिर- स्सिध्दमध्यापयन्ती॥
स्वोच्छिष्टायां स्रजि निगडितं या बलात्क्रुत्य भुंक्ते।
गोदा तस्यै नम इदमिमिदं भूय एवास्तु भूयः॥

{श्री गोदादेवी के भक्तिसार से भरा हुआ भगवच्छेषत्व का उपदेश देने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ तिरुप्पावै है। सबको इस के बारे में मालूम होना चाहिए। इस वजह से यह छोटा पत्र लिखा है। व्याकरण के अनुसार अगर कोई गल्तियां इस पत्र में रह गया, तो उसे ध्यान न देकर, इसका सारांश स्वीकार करिये। प्राचीन ग्रंथों को पढ़कर पूरा अर्थ समझ लीजिये।}

तिरुप्पावै का महत्व

तिरुप्पावै के बारे में तमिल में यह कहा गया है **"वेधमनैत्तुक्कुम वित्तागुम कोधै तमिज़ ऐऐन्दुम ऐन्दुम अरियाध मानिडरै वैयम सुमप्पधुम वंभु"।** इसका अर्थ यह है कि सारा वेद का सार तिरुप्पावै में है और जो लोग इन तीस पद्यों (verses) को नहीं जानते हैं उनको साथ ले जाना यह पृथ्वी का बोझ है। "**ऐऐन्दुम ऐन्दुम**" -**{(5*5)+5}** = तीस पद्य। गुरुपरंपरा प्रभावं के अनुसार श्री गोदाजी को साक्षात श्री भूदेवी की अवतार मानते हैं। बारह आज़वारों ने श्रीमन नारायण के बारे में चार हज़ार पद्य गाये हैं (दिव्य प्रभंदम)। इन पद्यों को "द्राविड वेदं" बोलते हैं(चारों वेद का सार)। आज़वारों में श्री गोदाजी का एक विशेष स्थान है।

हर एक विषय को पाँच पद्ये में बांटकर छे विषयों के बारे में तिरुप्पावै में बताया गया है।
(1) पावै व्रत (2) सबको बुलाकर एक साथ भजन करना (3) भगवान क्रुष्ण को नींद से जगाना (4) भगवान की प्रशंसा करना (5) उपदेश देना (6) भगवान के चरणों पर अर्पित करना

श्री विशिष्टाद्वैत सिध्दान्तम

विशिष्टास्य--विशेषणों के साथ -चित , अचित दोनों परमात्मा के विशेषण होते हैं।
अद्वितीयम- दो अलग नहीं हैं - एक ही तत्त्वं है। -Non dualism
इसका अर्थ है कि चित (आत्मा ,Chith, Soul), अचित(Matter, Achith) और परमात्मा असल में एक ही तत्त्व होते हैं। इस प्रकृति में तीन तत्त्व होने से भी, चित और अचित परमात्मा का "शरीर" होते हैं। शुरू में (प्रलय काल) सिर्फ़ परमात्मा (श्रीनारायण) थे। ***{एकोहवै नारायण आसीत। ब्रह्म एवेदमग्र आसीत।}*** सृष्टि के कारण उन्होंने स्वयं इच्छा से विभिन्न मनुष्य और जन्तुवों की सृष्टि करी हैं। यहाँ "शरीर" का मतलब प्राकृतिक अंग रक्षक शरीर नहीं है।वह भगवान का **नहीं है। {" न भूत संघस्स्यानो देहीस्य परमात्मन"}।** "शरीर" का मतलब भगवान सब के आधार होते हैं। बिना उनकी इच्छा से कुछ काम नहीं होगा। भगवान आत्माओं की आत्मा होते हैं। इसलिए उनको परमात्मा कहते हैं। दुनिया की सभी चीजें (वस्तुएँ) उनके भाग होते हैं। भगवान और चित-अचित के साथ यह जो "शरीर-आत्म भाव सम्बन्ध" है, वह हमारे सिध्दान्त का विशेष लक्षण है। **इस प्रकार का व्याख्या और किसी सिध्दान्त में नही है।**

हमारे संप्रदाय में चारों वेद और उपनिषद् को सबसे पुराणिक और साम्प्रदायिक मानते हैं। इन ग्रंथों को **अपौरुषेयम** (किसी मनुष्य ने नहीं बनाया) कहते हैं। स्वयं भगवान ने रचा। इनमें तीन तरह के श्रुति वाक्य होते हैं- **बेध ,अबेध और घटक**। बेध वाक्यों दो या तीन तत्व के बारे में कहते हैं। अबेध वाक्यों एक ही तत्त्व के बारे में कहते हैं। बाकी सिध्दान्त एक ही प्रकार के श्रुति वाक्य को ही मान सकते हैं। लेकिन हमारे सिध्दांत में तीनों प्रकार का श्रुति वाक्यों को स्वीकारा है।
जब हर एक तत्त्व के बारे में व्याख्या करते हैं उस समय बेध श्रुति वाक्यों को काम में लेते हैं। जब तीनों को इकट्टा करके एक ही तत्त्व (परमात्मा) का व्याक्या करते हैं , उस समय अबेध श्रुति वाक्यों को उपयोग करते हैं। चित और अचित को भगवान के विशेषण मानकर **शारीरात्म भाव सम्बन्ध** की व्याख्या करने के लिए घटक श्रुतियों को काम में लेते हैं।

तत्त्व, हितम और पुरुषार्थ ही सिध्दांत का मुख्य सारांश है। श्री नारायण ही **परतत्व** है । उनके पैरों पर अर्पित करना ही **परहितं (best means)**। पुरुषार्थ का मतलब जो पुरूष (जीवात्मा) ▯ ल मानके चाहते हैं ।सदा श्रीमन नारायण को चिंता करते, उनको सेवा करना चाहत और मोक्ष के बाद हमेशा उनको सेवा करना ही **परम पुरुशार्थ** है।

तिरुप्पावै में विशिष्टाद्वैत सिध्दान्तम

पहले पद्य में यह बताया गया है कि मार्गाशीर्ष महीने ही सबसे अच्छे है। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवत गीता में कहा है कि वह स्वयं इन महीनों में मार्गाशीर्ष होते हैं। **{ मासानां मार्गाशीर्षोऽहमृतूनाम कुसुमाकरः** - गीता 10-35}।***"नारायणने नमक्के परै तरुवान"-*** **सिर्फ़** नारायण ही हमें पार लगा सकते हैं। **परै** एक तरह का डोल होता है। लेकिन यहां पर "परै" का भावार्थ मोक्ष (भगवान का निरंतर और नित्य सेवा करने का मौका)।
हमारे सिध्दांत के अनुसार भगवान स्वयम हमारे लिये **उपायम** (Hitam = Means) और उपेयम (upeyam -goal-purushartam) होते हैं I We can attain him only through him.

व्रत के समय में जो नियम पालन करने का है ,उनके बारे में दूसरे पद्य में बताया है।
करने का क्रिया - भगवान का प्रशंसा करना, पूजा करना, दान या भिक्षा देना ।
टालने का क्रिया - किसी का बुराई करना, अपमान करना।

तीसरे पद्य में यह बताया है कि उनके बारे में गाने से या प्रार्थना करने से देश में सुसम्पत्ति रहेगी और किसी की भी बुराई नहीं होगी। ***{ओंगि उलगलंद उत्तमन पेर्पाडि ...तींगिन्रि नाडेल्लाम तिन्गल मुम्मारि पेय्दु ओंगु पेरुन्चन्नलूडु ....(3) }***
"नींगाद सेलवम" इसका अक्षरश या बाहरी अर्थ "असंख्य धन" होता है।
लेकिन इसका भावार्थ भगवान की नित्य सेवा करना ही है ।

"तूयोमाय वंदु नाम तूमलर तूवित तोज़ुदु वायिनाल पाडि मनत्तिनाल सिन्दिक्क पोय पिज़ैयुम पुगुदरुवान निन्त्रनवुम तीयिनिल तूसागुम ...."
पांचवे पद्य में, शुद्ध मन से, भगवान श्री कृष्ण की पूजा और प्रशंसा करने के ल के बारे में बताया है। तीन तरह की प्रार्थना होते हैं - शारीरिक, मानसिक और वाचिक।उनकी पूजा से मनुष्य ने   जो भी पाप किए है, जिसका नतीजा शुरू हुआ है, या भविष्य में होनेवाला है, वह सब प्रभावहीन हो जाएगा, जैसे धूल आग में डालने से गायब हो जाती है । यहां तीन तरह के पापों के बारे में बताया है -संचित कर्मा, आगमीकर्मा और प्रारब्ध कर्मा।

श्री गोदाजी ने पहले पाँच पद्यों में पावै व्रत की प्रशंसा करी हैं और महत्व बताये हैं। अगले दस पद्यों में सब साथियों को नींद से जगाकर व्रत में भाग लेने केलिए बुलाते हैं। यहां दो तरह के समूह का प्रदर्शन है - एक **कैंकर्यनिष्ठ** लोग जो भगवान की सेवा करने में अधीरता दिखाते हैं। और दूसरा **गुणानिष्ठ लोग,** जो भगवान के कल्याण गुणों को मन में रखके, भगवान पर पूरा विशवास रखके, ध्यान करने से ही संतुष्ट होते हैं।

गुणानिष्ठ लोग भगवान पर पूरा विशवास रखते हैं - इसलिए उनमें अधीरता नहीं है।
इस कारण से पद्य छे से पन्द्रह तक, भावार्थ के अनुसार,यह माना जाता है की श्री गोदाजी ने इन दस पद्यों में दस आज़्वारों को पावै व्रत में भाग लेने केलिये निमंत्रण किये हैं।

"मामायन माधवन वैकुंदन एन्रेरू नामं पलपरवि नविन्रेलोरेम्पावाय... (9) "
नौवां पद्य भगवान नाम स्मरण करने के महत्व को बताता है। नाम संकीर्तन की शक्ति भगवान की शक्ति से भी अधिक है।

"एल्लारुम पोंधारो पोंधार पोंधेण्णिक्कुल वल्लानै कोंरानै .. मायनै पाडेलोरेम्पावाय(15)"
इस पद्य में एक श्रीवैष्णवन की योग्यता के बारे में बताया है। भगवान के पूजा करते समय समूह या धार्मिक सभा   में इकट्टा होना जरूरी है। भगवान के सद्गुण और बहादुरी की प्रशंसा करने से सब लोग आनंद और संतुष्ट हो जाते हैं ।

पद्य सोलह से बीस तक श्री नन्दगोप, श्री यशोधा, श्री बलदेव, श्री नप्पिन्नै और श्रीकृष्ण को जगा कर, उनकी प्रशंसा किये हैं।

सोलहवें पद्य में मन्दिर के सरप्रस्त(Gate keeper) को बुलाने के बारे में कहा गया है। भावार्थ से यहां हमारे आचार्यों का प्रदर्शन है। उनके बिना हम लोग भगवान के पास नहीं पहुँच सकते हैं। **"तूयोमाय्** " का मतलब भीतरी पवित्रता-Purity of mind and not of body I इस पद्य का भावार्थ है कि भागवत आराधन (Service to Srivaishnavites) भगवत आराधन से उचित है।

उन्नीसवां और बीसवां पद्य में नप्पिन्नै का मुक्यत्व कहा गया है। यहाँ "नप्पिन्नै" श्रीनीलादेवी को संकेत करती हैं । उनका काम,हमें मोक्ष देने के लिए भगवान को सि ारिश करना है। इसे "पुरुषकारत्वं" कहते हैं। Her role is of recommending authority to Lord

इक्कीस से पच्चीस तक श्री कृष्ण की प्रशंसा की है। भगवान को " **ऊत्रमुडैयाय पेरियाय उलगिनिल थोत्रमाय निंर सुडरे .....**"बोलकर बयान किया है। इसका मतलब यह दुनिया उनका जन्गहिर है। और श्री कृष्ण स्वयम ही ब्रह्मण है, जिनका विवरण चारों वेद में दिया है।

"एंगल मेल नोक्कुदियेल एंगल मेल साबम इज़िंदेलोरेम्पावाय (22)" - यह पद्य का गायन सब रुकावटें हट जायेंगे। भगवान का दृश्य होने से हमारे कई तरह के पाप हट जायेंगे।
"याम वन्द कारियम आरायंदु अरुलेलोरेम्पावाय " (23)- भगवान की सेवा करना ही ल है।
हमें सिर्फ़ खुदाई दुआ चाहिए - और कुछ उनसे नहीं सीखना है। यह ही पुरुशार्थ (उपेयम) है।

"एन्रेंरुम उन सेवकमे एत्रिप परै कोल्वान इन्नुयाम वन्धोम इरन्गेलोरेम्बावाय (24)"
इस पद्य में भगवान के कई अवतारों के बारे में बताकर , उनकी प्रशंसा करके,
भगवान की प्रार्थना करते हैं कि हमेशा उनकी सेवा करने का मौका दिया जायेगा।

"परै तरुदियागिल तिरुत्तक्क सेवकमुम याम्पाडी वरुत्तमुम तीर्न्दु मगिज़नदेलो रेम्पावाय "(25) -भगवान उपायम (MEANS) और उपेयम (GOAL)होकर, हमें मोक्ष देते हैं।
यह ही नित्य और निरंतर पूर्ण सुख है ।

"कुरै ओंरुमिल्लाद गोविंदा उन्दन्नोडु उरवेल नमक्कु इन्गु ओज़िःकक ओज़ीयाडु अरियाद पिल्लैगलोम अन्बिनाल .... परैयेलो रेम्पावाय (28)" - श्री गोविंदजी
निर्दोष हैं और इस नाम से उनका सौलभ्य (Easy accessability to every one) का प्रदर्शन होता है। उन्के साथ जो शरीरात्मभाव सम्बन्ध है, उसे याद रखने से हमें मोक्ष मिलना ही है।

"इत्रैप परै कोल्वान अन्रु काण गोविंदा एत्रैक्कुम एज़्हेज़्हेंज़्ह पिरविक्कुम उन्दंन्नोडु उत्रोमेयावोम उनक्के नामात्चेय्वोम मत्रै नम कामंगल मात्रु ...." (29)- इस पूरा **तिरुप्पावै का सारांश इस वाक्य में ही है।** "परै" का असल मतलब कृष्ण को नित्य सेवा करने का मौका ही है सिर्फ़ इस जन्म में नहीं और भी जो जन्म होगा उनमे भी भगवान की सेवा करते रहेंगे। हमें किसी लाभ की इच्छा नहीं होनी चाहिये।
श्री रामानुजर ने इसका व्याख्या करी हैं ***"इतः परम सर्वेषु जन्मसु त्वथ स्वामिका एव भवामः। तवैव कैम्कर्यम करवामः। अस्माकं विश्यान्थर स्प्रुहां निवर्त्य।"***

"पट्ट्रबिरान गोदै सोन्न संगत तमिज़ मालै मुप्पदुम तप्पामे इन्गुप्परिसुरैप्पार ईरिरंदु माल्वरैत्तोल सेंगण तिरुमुगट्ट्र सेल्वत तिरुमालाल एन्गुम तिरुवरुल पेत्रू इन्बुरुवरेम्पावाय (30)"
इस पद्य में तिरुप्पावै के तीस पद्यों को रोज़ गाने से मिल्ने वाले लों के बारे में बताया है। सर्वकाल, सर्वदेश, सर्वावस्तै में भगवान की सेवा करने का भाग्य मिलने की प्रार्थना करना हमारा कर्तव्य है। श्रीमन नारायण की आशीष हमेशा जरूर मिलेगी।

श्रीमत्यै विष्णुचित्तार्य मनोनंदन हेतवे।
नंदनंदन सुन्दर्यै गोदायै नित्य मंगलम ॥
श्री गोदायै चरणं।
Aaazwaar Emberumaanaar Jeeyar tiruvadigale charanam.
आज़्वार एम्बेरुमानार जीयर तिरुवडिगले चरणम।